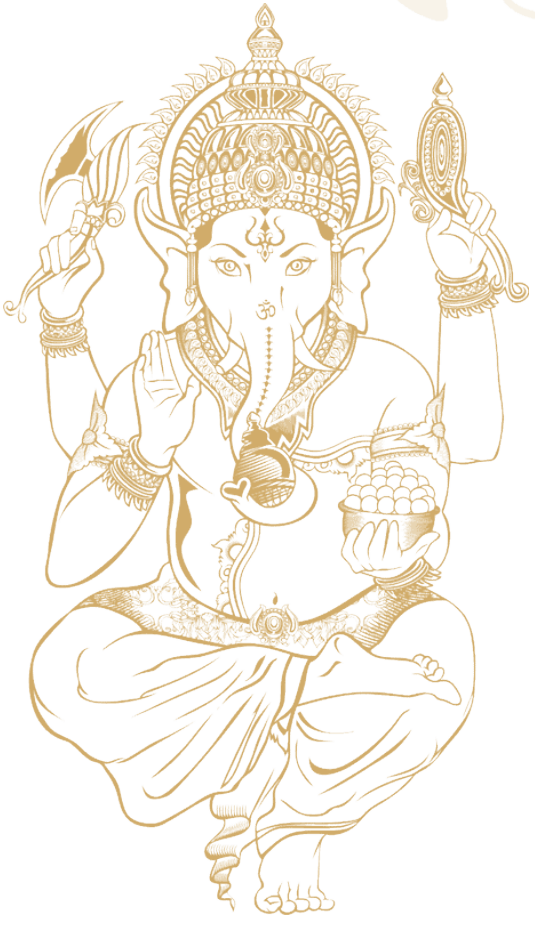

Tanvi Parkhe

01 May 2018

10:30 AM

Bhilai

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120424501**

तिथि 01/05/2018 **समय** 10:30:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Bhilai **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:06:33
अक्षांश 21:13:00 उत्तर **रेखांश** 81:26:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:04:16 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	01:02:04 घं
वेलान्तर	00:02:52 घं
सूर्योदय	05:34:03 घं
सूर्यास्त	18:29:06 घं
चैत्रादि संवत	2075
शक संवत	1940
मास	ज्येष्ठ
पक्ष	कृष्ण
तिथि	2
नक्षत्र	विशाखा
योग	वरियान
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	तो-तोरल
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
होरा	चंद्र
चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी

गुरु 3वर्ष 5मा 4दि
शनि
04/10/2021
04/10/2040

शनि	07/10/2024
बुध	17/06/2027
केतु	26/07/2028
शुक्र	26/09/2031
सूर्य	07/09/2032
चन्द्र	08/04/2034
मंगल	18/05/2035
राहु	24/03/2038
गुरु	04/10/2040

योगिनी

धान्या 0वर्ष 7मा 21दि
भद्रिका
22/12/2022
22/12/2027

भद्रिका	01/09/2023
उल्का	02/07/2024
सिद्धा	22/06/2025
संकटा	02/08/2026
मंगला	21/09/2026
पिंगला	01/01/2027
धान्या	02/06/2027
भ्रामरी	22/12/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			28:25:26	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			16:40:21	मेष	भरणी	2	शुक्र	चंद्र	उच्च राशि	1.71	मातृ	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			00:28:34	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	चंद्र	नीच राशि	1.42	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			29:25:35	धनु	उत्तराषाढ़ा	1	सूर्य	राहु	मित्र राशि	1.40	आत्मा	भ्रातृ	साधक
बुध			19:50:42	मीन	रेवती	1	बुध	शुक्र	नीच राशि	0.94	भ्रातृ	ज्ञाति	विपत
गुरु	व		25:14:11	तुला	विशाखा	2	गुरु	बुध	शत्रु राशि	1.09	अमात्य	धन	जन्म
शुक्र			13:48:02	वृष	रोहिणी	2	चंद्र	राहु	स्वराशि	1.56	ज्ञाति	कलत्र	वध
शनि	व		14:54:00	धनु	पूर्वाषाढ़ा	1	शुक्र	शुक्र	सम राशि	1.31	पुत्र	आयु	प्रत्यारि
राहु	व		16:08:15	कर्क	पुष्य	4	शनि	गुरु	शत्रु राशि		---	ज्ञान	सम्पत
केतु	व		16:08:15	मक	श्रवण	2	चंद्र	शनि	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

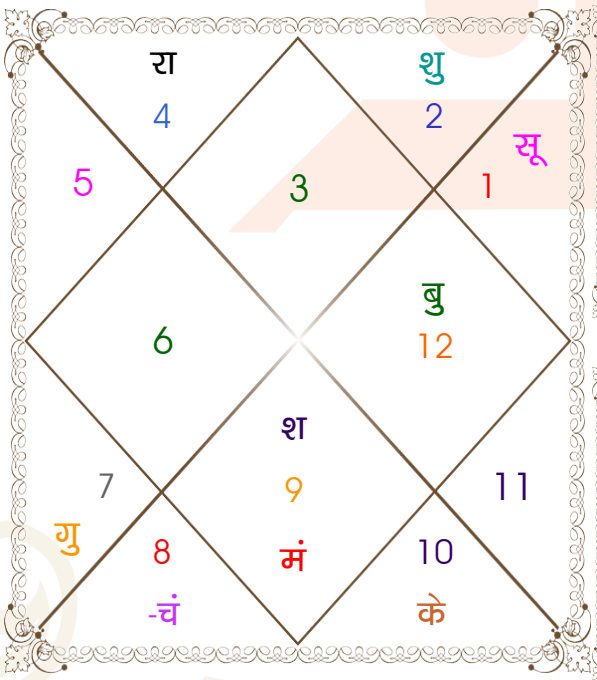

चन्द्र कुंडली

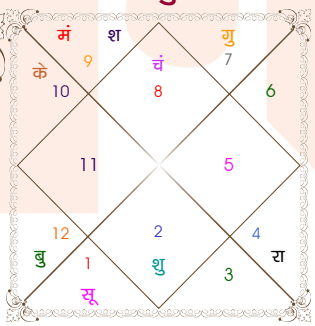

नवमांश कुंडली

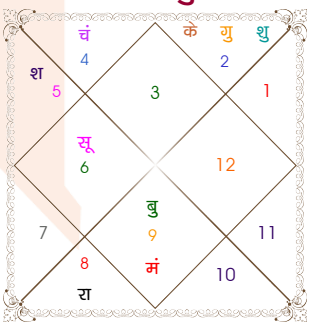

सर्वाष्टकवर्ग

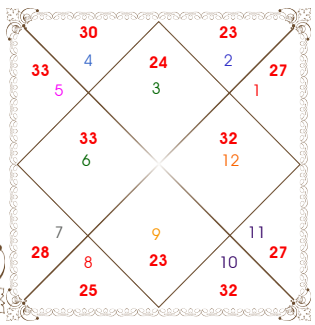

दशमांश कुंडली

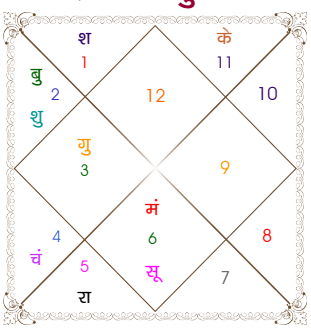

भक्ति शक्ति ज्योतिष केंद्र
पं गोकुल चंद शर्मा
मकान नं-389, सेक्टर 17A, गुरुग्राम, हरियाणा
9312257830

नक्षत्रफल

आपका जन्म विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी नाड़ी अन्त्य, वर्ण विप्र, गण राक्षस, वर्ग सर्प तथा योनि व्याघ्र होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "तो" अक्षर से होगा।

आपके पति पूर्ण रूप से हमेशा आपके वश में रहेंगे तथा आपकी सलाह लिए बिना कोई भी सांसारिक कार्य सम्पन्न नहीं करेंगे। सांसारिक कार्यों में स्वतंत्र निर्णय लेने में वे सर्वथा असमर्थता की अनुभूति करेंगे। आप स्वभाव से ही अभिमानी प्रवृति की भी होंगी तथा छोटी छोटी बातों पर या वस्तुओं पर अन्य लोगों के समक्ष इस प्रवृति का प्रदर्शन करेंगी। आपके समस्त शत्रु आपसे हमेशा पराजित रहेंगे तथा आपका विरोध करने का उनमें बिल्कुल भी साहस नहीं होगा। आपकी प्रवृति क्रोधी भी होगी तथा अकारण एवं अनावश्यक रूप से अधिक मात्रा में क्रोध करने से आप कई बार मानसिक तथा आर्थिक परेशानियों का सामना करेंगी।

गर्वी दारवशो जितारिरधिक क्रोधी विशाखोद्भवः।
जातक परिजातः

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक घमंड, हमेशा अपनी पत्नी के वश में रहने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का होता है।

कभी कभी आपका स्वभाव समाज के अन्य जनों के प्रति अकारण ईर्ष्या तथा द्वेष रखने वाला भी होगा। यदि कोई व्यक्ति आपकी अपेक्षा कोई अच्छा कार्य करेगा या कोई उपलब्धि प्राप्त करेगा तो आप उसके प्रति ईर्ष्यालु हो जाएंगी। लोलुपता का भाव भी आपके हृदय में विद्य मान रहेगा तथा अन्य लोगों की वस्तुओं को देखकर आपका मन भी उसके प्राप्त करने के लिए लालयित होगा। आपका शरीर कान्तिमय रहेगा तथा बोलने में आप अत्याधिक चतुर रहेंगी तथा इसी चतुराई के कारण आपके अधिकांश कार्य सफल होंगे।

ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक ईर्ष्या तथा द्वेष करने वाला, लोभी, कान्तियुक्त, वाक्चतुर तथा कलहप्रिय होता है।

आप के मन में धर्म के प्रति आस्था एवं विश्वास रहेगा तथा समय समय पर देवताओं के निमित घर में हवनादि कार्यों को सम्पन्न करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके मित्रों की संख्या भी अल्प ही रहेगी।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवादि पूजन के निमित हवनादि कार्यों में रत रहने वाला, धातुक्रिया में कभी उग्र तो कभी सौम्यता का प्रदर्शन करने वाला तथा किसी का भी मित्र नहीं होता है।

आप के मन में दया एवं करूणा के भाव की न्यूनता रहेगी। अन्य जनों से पारस्परिक वाद विवाद भी आपका होता रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य जनों से भी आपके प्रेमपूर्वक संबंध रहेंगे।

अतिलुब्धोडतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।
मानसागरी

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अति लोभी, घमंडी, निष्ठुर, झगड़ा करने वाला तथा अन्य स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ है। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते है। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा। अपितु अधिकांश शुभ ही रहेगा। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु भी अल्प मात्रा में ही रहेंगे वे सभी आपसे पराजित तथा प्रभावित रहेंगे। कभी कभी आप स्वाभाविक रूप से क्रोध या उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगी। आप सुन्दर एवं आकर्षक महिला होंगी तथा शरीर में लावण्यता पूर्ण रूपेण विद्य मान रहेगी। जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। इसके अतिरिक्त कभी कभी आप अल्प मात्रा में शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगी।

वृश्चिक राशि में पैदा होने के कारण आपका वक्षस्थल विस्तृत होगा तथा नेत्र भी विशालता लिए होंगे। आपका स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा परन्तु अल्प श्यामलता से युक्त रहेगा। आपके हाथ पैरों में मत्स्य का चिन्ह भी हो सकता हैं। आपके हाथ की अधिकांश रेखाएं वज्र तथा पक्षी के आकार की होगी। आपके माता पिता तथा गुरूजनों से अल्प संबंध रहेंगे। अतः उनका सहयोग भी अल्प मात्रा में ही आप प्राप्त करेंगी। बचपन में आप काफी बीमार रहेंगी। परन्तु आपकी बुद्धि अत्यन्त ही तीक्ष्ण होगी तथा अपनी बुद्धिबल से आप राज्य या सरकार में किसी उच्च पद को प्राप्त कर सकेंगी। आप कठोर तथा क्रूरकर्मों को करने में उद्यत होंगी। अतः सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों में कार्यरत हो सकेंगी। आपके स्वभाव में कभी कभी कुटिलता का भाव भी परिलक्षित होगा।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः कूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका उदर भाग तथा मस्तक भी विस्तृत रहेगा। आप स्वभाव से ही लालची होंगी तथा समय समय पर अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करती रहेंगी। आपके शरीर में लावण्यता भी मध्यम रूप से रहेगी। धर्म तथा ईश्वर के प्रति आपके मन में सामान्य निष्ठा विश्वास रहेगा। आपके नाखून तथा चेहरे पर किसी घाव आदि का निशान भी हो सकता हैं। विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य तथा वैभव से आप सर्वथा युक्त रहेंगी तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगी। आप किसी न किसी कार्य को करने में हमेशा तत्पर रहेंगी तथा इनमें दक्षता भी प्राप्त करेंगी। बन्धुवर्ग से आप सामान्य सहयोग प्राप्त करेंगे। आप के पराक्रम से सभी प्रभावित रहेंगे तथा आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ राज्य या कानून संबंधी मामलों में आप को धनहानि सहन करनी पडेगी। आपका स्वभाव उग्रता से भी युक्त रहेगा तथा अन्य जनों से भी आपका प्रेमपूर्वक संबंध रहेगे।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः कूरचेष्टः।
चौरो बालो रुगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप धनाढ्य महिला होंगी तथा बहुत से पारिवारिक या अन्य जनों की आप पालन करने वाली होंगी। पुरूषों के विषय में आप अत्यन्त सौभाग्य शाली होंगी तथा इनसे पूर्ण सम्मान, सहयोग तथा लाभ प्राप्त करेंगी। समस्त मनुष्यता के गुणों से भी आप सुशोभित रहेंगी तथा सरकारी सेवा में भी आप तत्पर रह सकेंगी। आप हमेशा अन्य लोगों के धन को प्राप्त करने की इच्छा अपने मन में रखेंगी तथा जीवन में इसके लिए पूर्ण रूपेण प्रयत्नशील भी रहेंगी। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही दृढता युक्त रहेगी तथा किसी भी कार्य को सम्पन्न करने पर उसे पूरा करके ही छोड़ेंगी। साथ ही साहस एवं वीरता के गुण से भी आप में विद्यमान रहेंगे तथा साहसपूर्वक अपने समस्त कार्य को सिद्ध करेंगी।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आप जुआ आदि खेलने की प्रकृति से भी युक्त रहेंगी फलतः कई बार आपको इससे काफी धन हानि उठानी पड़ेगी। साथ ही अन्य लोगों से विवाद आदि भी आप के होते

रहेंगे। आपके हृदय में दुर्बलता भी परिलक्षित होगी साथ ही कई कारणों से आप अधिकांश रूप से अशान्त ही रहेंगी।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप प्रारम्भ से ही घूमने फिरने की शौकीन रहेंगी तथा बचपन से ही आप काफी भ्रमण तथा यात्राएं करेंगी। आपका स्वभाव भी अभिमानी होगा तथा अनावश्यक रूप से इस का प्रदर्शन करती रहेंगी इससे आपकी सामाजिक अवभानना होगी। स्वजनों तथा बन्धु वर्ग के प्रति भी आपके मन में सामान्य स्नेह का भाव रहेगा। साहसपूर्वक धनार्जन करने में आप पूर्ण रूप से सक्षम तथा सफल रहेंगी।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण कभी कभी आपकी प्रवृति व्यर्थ बोलने की अधिक रहेगी। आप हृदय से भी कठोर होंगी तथा दया एवं करूणा का भाव यदा कदा ही प्रदर्शित करेंगी। आप एक साहसी महिला होंगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को साहस के साथ ही सम्पन्न करेंगी। आप नैसर्गिक रूप से ही शीघ्र क्रोधित होने वाली होंगी तथा छोटी छोटी बातों पर इसका प्रदर्शन प्रायः करती रहेंगी। आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा शरीर से काफी शक्तिशाली रहेंगी। अन्य लोगों से आपके विवाद भी होते रहेंगे। अतः उन से आपका अधिकांश वैमनस्य का भाव रहेगा।

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से पीड़ित हो सकती हैं। आपकी मुख की आकृति भी दीर्घ रहेगी। साथ हीं आप अपने सम्भांषण में कभी कभी कढोर शब्दों का प्रयोग करेंगी। अतः लोग आपसे असन्तुष्ट रहेंगे। अतः प्रयत्नपूर्वक आपको मधुर शब्दों का अपने वार्तालाप में उपयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रकृति स्वतंत्रताप्रिय होगी तथा अपने समस्त कार्यों को आप स्वछन्दता से ही सम्पन्न करना पसन्द करेंगी। बाहरी दवाब तथा हस्तक्षेप

आपको बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगेगा। धनार्जन में आप हमेशा तत्पर रहेंगी। अच्छी बातों तथा गुणों को ग्रहण करने के प्रति भी आपकी प्रवृति हमेशा जागृत रहेगी। अपने कार्य क्षेत्र की आप पूर्ण प्रशिक्षित महिला होगी अतः सभी लोग आपका सम्मान पूर्वक आदर करेंगी। साथ ही नाना प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से आप युक्त होकर जीवन में उसका उपभोग करेंगी परन्तु आप अपने मुंह से अपनी प्रशंसा करेंगी जिससे लोगों में आपके प्रभाव तथा सम्मान की न्यूनता आएगी।

स्वच्छन्दोडर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठभाव में स्थित है। अतः आप माता की प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक रूप से वे दुर्बलता की अनुभूति करेंगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको पूर्ण रूप से हर सम्भव सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। इसके साथ ही आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में यदि कोई व्यवधान आएंगे तो उन्हें दूर करने में सर्वदा प्रयत्नशील रहेंगी तथा आपकी सफलता की सर्वदा इच्छुक होंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा तथा सम्मान की भावना रखेंगी तथा हमेशा उनकी सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगी परन्तु आपके मध्य कभी कभी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे अप्रिय स्थितियां भी उत्पन्न होंगी लेकिन फिर भी सामान्य संबंध मधुर ही रहेंगे। साथ ही उनको जीवन में वांछित सहायता एवं सहयोग प्रदान करने की भी आप इच्छुक रहेंगी।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य

अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यातिपात योग, गरकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा धनु राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अनिष्ट फल दायक होंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कपर्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी अतः 1,6,11 तिथियां, शुक्रवार रेवती नक्षत्र, गरकरण तथा धत्रु राशिस्थ चन्द्रमा को हमेशा शुभ कार्यों में त्याज्य ही रखें। इन दिनों तथा समय में आपको अपने स्वास्थ्य तथा शारीरिक सुरक्षा का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में बाधाएं आ रही हो अथवा अन्य शुभ कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की उपासना करनी चाहिए तथा सोमवार एवं वृहस्पतिवार के उपवास रखने चाहिए। इसके अतिरिक्त सोना, मूंगा, रक्त वस्त्र, चन्दन तथा पुष्प एवं गेहूं, मनका आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथ अशुभ फलों के प्रभाव में न्यूनता आएगी। साथ मंगल के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिये।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ थीं भौमाय नमः।